

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, क्राइस्टोलॉजी, सत्र 16, सिस्टेमेटिक्स, केनोइसिज्म की आलोचना, मसीह की मानवता, कुलुस्सियों 1:15-20

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा क्राइस्टोलॉजी पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र संख्या 16 है, सिस्टैमेटिक्स, केनोइसिज्म की आलोचना, मसीह की मानवता, कुलुस्सियों 1:15-20।

मसीह के ईश्वरत्व के पाँच ऐतिहासिक प्रमाणों के साथ काम करने के बाद, हमने तथाकथित अतिरिक्त-कैल्विनिस्टिकम पर ध्यान दिया, कि कैसे परमेश्वर पुत्र पूरी तरह से देहधारी हुआ और फिर भी नासरत के यीशु से पूरी तरह बाहर रहा।

फिर हमने केनोसिस और विहित सिद्धांतों की शुरुआत की, और हम उस बिंदु पर पहुँच गए जहाँ हम मसीह के व्यक्तित्व को सीख रहे हैं, डेविड वेल्स, केनोसिस दृष्टिकोणों की आलोचनाएँ। सबसे पहले, आलोचकों को यह स्पष्ट नहीं था कि यह संभव है, जैसा कि टॉमसियस और अन्य लोगों ने प्रस्तावित किया था, ईश्वर के कुछ गुणों को ईश्वर के सार से अलग करना। एकमात्र ईश्वर जिसके बारे में शास्त्र बोलता है वह सर्वशक्तिमान है, सब कुछ जानता है, और हर जगह है।

परिभाषा के अनुसार, एक ईश्वर, छोटा जी, जिसकी शक्ति और ज्ञान कम हो गया है, वह बाइबिल का ईश्वर नहीं है। फ़ोर्सिथ ने चर्चा की भाषा का उपयोग करने से इनकार करके इस आलोचना की ताकत से बचने की कोशिश की, लेकिन क्या यह टालमटोल सफल रहा, यह संदिग्ध है। पवित्रशास्त्र हमें कहीं भी यह सोचने के लिए प्रोत्साहित नहीं करता है कि ईश्वरीय होने के लिए एक अपरिवर्तनीय न्यूनतम है और ऐसे कार्य और विशेषताएँ हैं जो सामान्य रूप से ईश्वरीय होने से जुड़ी हैं जो केवल वैकल्पिक अतिरिक्त हैं।

दूसरा, केनोटिक सिद्धांतों ने त्रिदेव के आंतरिक संबंधों में व्यवधान उत्पन्न किया। कुछ सिद्धांतकारों ने अपने विचारों को उदारवादी शब्दों में प्रस्तुत किया, जबकि अन्य ने कट्टरपंथी तरीकों से। लेकिन जो बात आम थी वह यह थी कि एक अवधि के लिए, चाहे वह छोटी हो या लंबी, देहधारी पुत्र की दिव्य आत्म-चेतना को मिटा दिया गया था।

इतना ही नहीं, बल्कि दिव्यता को मात्र संभाव्यता में संकुचित भी कहा गया। हालाँकि, यह संभाव्यता दिव्य निष्क्रियता का पर्याय बन गई, और दिव्य निष्क्रियता को केवल सिद्धांत में ही दिव्य नपुंसकता से अलग किया जा सकता है। व्यवहार में, एक आवश्यक निष्क्रियता एक परिचालन नपुंसकता है।

कई केनोटिक सिद्धांतों में, यह वस्तुतः उस बड़ी भूमिका में स्वीकार किया गया था जो मानव यीशु के पालन-पोषण में पवित्र आत्मा को हमेशा सौंपी गई थी। आत्मा विलुप्त, शक्तिहीन शब्द के लिए एक प्रतिनिधि बन गई। व्यवहार में, इसका मतलब था कि अवतार काल के दौरान, दिव्य सर्किटरी टूट गई थी। दूसरा व्यक्ति ईश्वरत्व से अनुपस्थिति की छुट्टी पर था, और त्रिदेव सबसे

अच्छे रूप में एक द्वित्व में सिमट गए थे ।

तीसरा, दिव्य के संकुचन ने अनिवार्य रूप से उस प्रेम को बिगाड़ दिया, जिसे प्रदर्शित करना विहित सिद्धांतों का मुख्य उद्देश्य था। एबी ब्रूस ने कहा, उद्धरण, लेकिन जिस प्रेम ने ईश्वर के पुत्र को मनुष्य बनने के लिए प्रेरित किया, उसने एक ही झटके में खुद को भस्म कर लिया, उद्धरण बंद करें।

जिस प्रेम के लिए अवतार, परिणामस्वरूप, वर्षों तक खो गया था जब तक कि यीशु ने अपने भीतर इसकी पहली तड़प नहीं पाई, और अंत में इसके लिए आमीन कहने में सक्षम हो गया। ईश्वरीय शब्द ने यीशु के जीवन के अधिकांश समय के लिए अपनी चेतना खो दी, और उस हानि में बहुत कुछ निहित है जिसे विहित सिद्धांत प्रदर्शित करने का दावा करते हैं। चौथा, अधिकांश विहित विचारों ने ईश्वरत्व को मनुष्यत्व में परिवर्तित कर दिया, जो कि पुत्र को परिवर्तन के अधीन मानने पर निकेया के निषेध का उल्लंघन करता है।

मेरा मानना है कि चाल्सीडॉन को यह मानने से मना करना चाहिए कि पुत्र परिवर्तन के अधीन है और इस प्रक्रिया में, मसीह में एकता के किसी भी गंभीर तत्व को हटा दिया गया है। क्योंकि अगर यह लोगो, दिव्य विशेषताओं से रहित, खुद को एक मानवीय अहंकार में बदल लेता है या खुद पर मानवीय स्वभाव ले लेता है, तो जो कुछ भी जुड़ता है वह अनिवार्य रूप से संगत होता है। यदि लोगो को मानवता के आयामों तक सीमित कर दिया गया था, तो मानवता के साथ जुड़ने पर, एकता की आवश्यकता के बारे में बात करने का कोई कारण नहीं है जब असहमति की संभावना अब नहीं है।

स्व-घटित लोगो और मनुष्य यीशु का मानवीय केंद्र बस एक ही आत्म-चेतना के निर्देशांक बन गए। एक व्यक्ति कभी भी तत्वों का मिश्रण नहीं हो सकता, अनिवार्य रूप से विरोधाभासी या भिन्न, और इसलिए यह कहना कि मसीह एक था, उतना ही असाधारण था जितना यह कहना कि आज लोग एक हैं। पाँचवाँ, विहित सिद्धांतों ने अपमान के तत्व को गलत तरीके से रखा।

निस्संदेह, वे उस व्यक्ति के लिए अवतार की महँगीता पर ज़ोर देने में सही थे जिसने हमारी गरीबी के लिए अपनी दौलत को समर्पित कर दिया। हालाँकि, इस बात को बहुत ज़्यादा बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना संभव है, शायद यह धारणा भी छोड़ देना कि मानव होने के बारे में कुछ अपमानजनक और निंदनीय है। यदि फिलिप्पियों 2:5 से 11 के जोर को बनाए रखना है, तो अपमान के तत्व को मसीह के अवतार के साथ नहीं बल्कि उसके प्रायश्चित, उसकी मृत्यु के साथ जोड़ा जाना चाहिए।

जो अपमानित और निंदनीय है वह वह शरीर नहीं है जिससे वह जुड़ा था, बल्कि वह पाप है जिसे उसने परमेश्वर के साथ हमारे मेल-मिलाप को प्रभावित करने के लिए हमारे विकल्प के रूप में अपने ऊपर लिया। मसीह ने अवतार के उद्देश्यों के लिए खुद को खाली कर दिया, लेकिन उसे छुटकारे के कार्य के लिए खुद को विनम्र करना पड़ा। हम मसीह की मानवता की ओर बढ़ते हैं।

हम कुलुस्सियों 1:15 से 20 से शुरू करना चाहते हैं, एक ऐसा अंश जो स्पष्ट रूप से मसीह के ईश्वरत्व और मानवता दोनों से भरा हुआ है, लेकिन मैं आपको एक सिंहावलोकन देना चाहता हूँ कि हम उसके बाद कहाँ जाएँगे। मसीह की मानवता का हमारा अध्ययन अवतार से शुरू होता है, क्योंकि अवतार ईश्वरीय पुत्र की मानवता की शुरुआत है। जैसा कि हमने कई बार कहा है, उसने अपने लिए एक मानव प्राणी नहीं लिया। उसने अपने लिए एक मानव स्वभाव, एक मानव शरीर और आत्मा ली, ताकि मनुष्यों को उनके पापों से छुड़ाया जा सके।

हम दूसरे प्रमाणों का उपयोग करने जा रहे हैं, इसलिए अवतार मसीह की मानवता को साबित करता है। यह तथ्य कि यीशु में मानवीय कमज़ोरियाँ और ज़रूरतें थीं, उसकी मानवता को भी साबित करता है। वह थका हुआ था; वह प्यासा था, वह परीक्षा में पड़ा था, और उसने खतरे से परहेज़ किया।

इसके अलावा, मानवीय भावनाओं को प्रदर्शित करने में उनकी मानवता स्पष्ट है। वह क्रोधित और दुखी था, अपने मित्र लाज़र के लिए प्रेम दिखाया, और संकट का अनुभव किया। उसके मानवीय अनुभवों में उसकी मानवता बहुत स्पष्ट है।

वह पैदा हुआ, और उसका गर्भाधान चमत्कारी था, लेकिन उसका जन्म हमारे जैसा ही था। वह बड़ा हुआ। लूका 2:52 में, वह बुद्धि और ज्ञान में बढ़ा। लूका 2:52 में, मैंने इसे गलत बताया। वह बुद्धि और कद में बढ़ा, बस इतना ही। वह बुद्धि और कद में बढ़ा और परमेश्वर और मनुष्य के अनुग्रह में बढ़ा। यानी, देहधारी पुत्र बौद्धिक, शारीरिक, आध्यात्मिक और सामाजिक रूप से बड़ा हुआ।

पिछले कुछ सालों में, मेरे छात्रों के लिए इन बातों को कबूल करना बहुत मुश्किल रहा है। ओह, वे बाइबल पर विश्वास करते हैं, वे ल्यूक 2 पर विश्वास करते हैं, लेकिन किसी तरह उन्होंने मसीह के ईश्वरत्व से शुरुआत की और उदारवादी और पंथवादी हमलों के खिलाफ मसीह के ईश्वरत्व की रक्षा करने की आवश्यकता देखी, जिससे वे अनजाने में यीशु की पूरी मानवता को कम आंक रहे थे। और यह कहना कि वह बौद्धिक रूप से बड़ा हुआ, अजीब लगता था।

वह शारीरिक रूप से बड़ा हुआ; फिर से, परमेश्वर शारीरिक रूप से बड़ा हुआ। नहीं, वास्तव में नहीं, लेकिन परमेश्वर-मनुष्य, अपनी मानवता के संदर्भ में, शारीरिक रूप से बड़ा हुआ। क्या वह आध्यात्मिक रूप से बड़ा हुआ? क्या यीशु आध्यात्मिक रूप से बड़ा हुआ? हाँ, देहधारी शब्द के रूप में, वह आध्यात्मिक और सामाजिक रूप से भी बड़ा हुआ। और अगर हम समझते हैं कि ये बातें सही हैं, तो विकास के वे क्षेत्र हमारे उद्धार के लिए उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने कि उसका आवश्यक और शाश्वत देवता।

इसी तरह, उनका क्रूस पर चढ़ना और मृत्यु भी मानवीय अनुभव हैं। मैं अनादरपूर्वक कहता हूँ कि स्वर्ग में परमेश्वर को क्रूस पर नहीं चढ़ाया जा सकता और न ही उसकी मृत्यु हो सकती है। स्वर्ग में परमेश्वर धरती पर परमेश्वर बन गया, विशेष रूप से इब्रानियों 2;14 और 15 के अनुसार, मृत्यु का अनुभव करने और शैतान को हराने और अपने लोगों को मुक्ति दिलाने के लिए।

इसके अलावा, यीशु का अपने पिता के साथ मानवीय रिश्ता था। अरे, अनंत काल तक तो नहीं, लेकिन अपने सांसारिक मंत्रालय में, उसका अपने पिता के साथ मानवीय रिश्ता ज़रूर था। वह परमेश्वर के अधीन था।

ये बातें इस बात से स्पष्ट हैं कि इन्हें बदला नहीं जा सकता। यह कहना सही नहीं है कि पिता बेटे के अधीन था। यह काम नहीं करता।

लेकिन बेटा परमेश्वर के अधीन था। हम आवश्यक और कार्यात्मक या आर्थिक अधीनतावाद के बीच के अंतर की अधिक जांच करेंगे, लेकिन इसके बारे में कोई गलती न करें। यूहन्ना 14:28 में, यीशु ने कहा कि पिता मुझसे बड़ा है। यीशु ने अपने पिता का सम्मान किया।

उसने परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन किया। यह कहना सही नहीं है कि पिता ने यीशु की आज्ञाओं का पालन किया। बाइबल की एक किताब, इब्रानियों, में तीन बार बेटे के सिद्ध होने की भाषा का इस्तेमाल किया गया है।

ओह, यह हमें परेशान करता है। और उसे किस अर्थ में परिपूर्ण बनाया गया? मेरा मतलब है, वह भगवान है। उसे परिपूर्ण बनाने की ज़रूरत नहीं है। वह एक पापरहित व्यक्ति है।

वह कभी पापी नहीं था; उसे पूर्ण होने की आवश्यकता थी। इसका क्या अर्थ है? इब्रानियों 2, 10, इब्रानियों 5, 8, और 9, तथा इब्रानियों 7:28 में परमेश्वर के पुत्र की पूर्णता का यह सिद्धांत है। निश्चित रूप से, यह पुत्र के संपूर्ण व्यक्तित्व से संबंधित है, जो उसकी मानवीयता के संदर्भ में है, लेकिन हम इसे कैसे समझें? इसका अर्थ क्या है? इब्रानियों के तर्क में इसका क्या कार्य है? यीशु पाप रहित था।

हम इसे यूहन्ना, इब्रानियों, 1 यूहन्ना, 2 कुरिन्थियों, 1 पतरस, पूरे नए नियम में पाते हैं। मुझे लगता है कि मैंने इसे तब पाया जब मेरे पास एक पूरी सूची थी, जैसे कि 20 अलग-अलग बार, जो पहले से ही यशायाह 53 से शुरू हो रही थी। उसके मुँह में कोई छल नहीं था।

और परमेश्वर उसे मेरा धर्मी सेवक कहता है। यीशु की पापहीनता महत्वपूर्ण है। कहीं ऐसा न हो कि हम भ्रमित हो जाएं और यह सोच लें कि पाप मानव स्वभाव का एक अनिवार्य हिस्सा है।

ऐसा नहीं है। यह एक विक्षिप्तता है, और यह एक विकृति है। इसलिए, यीशु दूसरा मनुष्य है, अंतिम आदम, या धार्मिक रूप से हम भाषा का उपयोग करते हैं, दूसरा आदम।

इस मुखियापन धर्मशास्त्र में, हव्वा की गिनती ही नहीं होती। बेशक, उसे भी पाप रहित बनाया गया था। लेकिन यह आदम का दूसरे आदम के विरुद्ध होना है।

वे दोनों पाप रहित थे, लेकिन उनमें से केवल एक ही पाप रहित रहा। अंत में, जहाँ तक यीशु के ईश्वरत्व के प्रमाणों का सवाल है, मैं तीन स्थानों पर नज़र डालना चाहूँगा। यीशु की मानवीयता के प्रमाण, क्षमा करें।

तीन जगहें जहाँ यीशु की मानवता, मेरे शब्दों में, कच्ची है। चर्च के पादरियों को इन जगहों से परेशानी थी। उन्होंने मूल रूप से धर्मग्रंथ की अपनी व्याख्या में हेराफेरी की।

चूँकि यीशु की मानवता इतनी कच्ची थी, इसलिए यह उनके लिए शर्म की बात थी। वे गलत थे। वे उसकी मानवता को कम करके उसके ईश्वरत्व की रक्षा कर रहे थे।

उन्हें इस बात पर खुशी मनानी चाहिए थी कि जो ईश्वर के रूप में मौजूद था, उसने सचमुच हमें बचाने के लिए एक सेवक, एक गुलाम का रूप धारण किया। और उसका ईश्वरत्व बिल्कुल ज़रूरी है क्योंकि सिर्फ़ ईश्वर ही हमें बचा सकता है। और उसकी मानवता भी, जैसा कि सेंट एंसलम ने सही कहा था, बिल्कुल ज़रूरी है क्योंकि सिर्फ़ ईश्वर-मनुष्य ही हमें बचा सकता है।

स्वर्ग में परमेश्वर या पृथ्वी पर परमेश्वर, मानव स्वभाव के बिना, हमें बचाने के लिए मर नहीं सकता। प्रलोभनों का सफलतापूर्वक अनुभव नहीं कर सकता। वह उठ नहीं सकता क्योंकि वह कभी मरा ही नहीं।

ये सभी बातें उसकी पूरी मानवता की मांग करती हैं, जिसमें ये कठिन अंश भी शामिल हैं। जंगल में उसके प्रलोभनों ने उसकी मानवता को इस तरह से दिखाया कि कई ईसाई मसीह के जीवन पर बनी फिल्में देखकर शर्मिंदा हो जाते हैं। मैं मसीह के जीवन पर बनी किसी खास फिल्म का समर्थन नहीं कर रहा हूँ।

लेकिन जंगल में उसे परीक्षा में डाला गया, सचमुच परीक्षा में डाला गया। और यह पिता की इच्छा नहीं थी कि वह दिव्य शक्तियों का उपयोग करे। वास्तव में, शैतान उसे जिस प्रलोभन से चिढ़ा रहा था, वह उसे अपनी दिव्य शक्तियों का उपयोग करने के लिए उकसाना था।

यदि तुम ईश्वर के पुत्र हो, तो इन पत्थरों को रोटी बनाओ। मंदिर से कूद जाओ, और ईश्वर तुम्हारी रक्षा करेगा, भले ही मैं इस शास्त्र को इस तरह से विकृत कर रहा हूँ।

शैतान ने कहा, मेरे सामने झुक जाओ, और मैं तुम्हें दुनिया के राज्य दूंगा। यह पिता की इच्छा थी, न कि बेटा दिव्य शक्तियों का प्रयोग करे, जो उसके पास थीं और जिसका वह कभी-कभी उपयोग करता था। लेकिन यह पिता की इच्छा थी कि बेटा परमेश्वर के वचन में शरण ले और शैतान के साथ आध्यात्मिक लड़ाई करे, तीन बार व्यवस्थाविवरण का हवाला देते हुए। तुम अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा न लेना। तुम उसकी आराधना करो, और केवल वही है जिसकी तुम्हें सेवा करनी चाहिए।

दूसरे, पिता पहले से ही इस तथ्य से भ्रमित है कि यीशु ने कहा कि कोई भी मसीह की वापसी का समय नहीं जानता, न स्वर्ग के स्वर्गदूत, न ही पुत्र।

यह स्पष्ट रूप से खुद के लिए एक संदर्भ था। ओह, पिता ने कहा, उसने बस यही कहा। वह वास्तव में यह जानता था, यह जानता था।

वे ऐसा क्यों कहेंगे? क्योंकि यह उनके ईश्वर होने के साथ असंगत लगता है। यह असंगत नहीं है। जब हम अतिरिक्त कैल्विनिस्टिकम को स्वीकार करते हैं, तब भी त्रिदेव बरकरार रहते हैं।

दूसरा व्यक्ति यीशु से बाहर रहता है। उसी तरह, वह पूरी तरह से अवतार बन जाता है। ओह, यह व्याख्या रहस्यमय है, निश्चित रूप से।

लेकिन अवतार लेने के बाद, वह अपनी दिव्य शक्तियों को बरकरार रखता है, और वह उनका उपयोग करने में सक्षम है, लेकिन वह शैतान की प्रार्थनाओं को सुनने से इनकार करता है और पिता की इच्छा के बाहर उन शक्तियों का उपयोग नहीं करता है। बल्कि, जैसा कि एक मित्र ने मुझे आज ही याद दिलाया, उसने हमेशा और केवल पिता की आज्ञा का पालन किया, और इसमें अपनी दिव्य शक्तियों का उपयोग करना भी शामिल था। ओह, चलो, क्या उसने कभी उनका उपयोग किया? हाँ, उसने किया।

मैं तुमसे कहता हूँ, तुम्हारे पाप क्षमा हो गए हैं। अरे, उसके दुश्मन तो बस घृणा में थे। यह कैसा व्यक्ति है? यह व्यक्ति कौन है? यह ईशनिंदा है।

यीशु ने अपनी दिव्य शक्तियों का उपयोग करते हुए, उनके विचारों को पढ़ा, उनके अविश्वास को समझा, और कहा, ताकि तुम जान सको कि मनुष्य के पुत्र के पास पृथ्वी पर पापों को क्षमा करने की शक्ति है, अर्थात् एक अदृश्य चमत्कार करने की। कोई भी ढोंगी कह सकता है कि तुम्हारे पाप क्षमा हो गए हैं, लेकिन यीशु कोई ढोंगी नहीं था। तुम जानते हो कि मैं ऐसा कर सकता हूँ। मुझे एक करने दो, तुम देख सकते हो।

वह कहता है, अपना बिस्तर उठाओ और चलो। और वह आदमी चलता है। और वे इससे भी खुश नहीं हैं, क्योंकि, ज़ाहिर है, वह शनिवार था।

क्या यीशु के पास सब कुछ जानने की दिव्य क्षमता नहीं थी? हाँ। क्या कभी-कभी जब पिता की इच्छा होती थी, तो वह अलौकिक ज्ञान का प्रयोग नहीं करता था? हाँ। वह सामरी स्त्री द्वारा किए गए हर काम को जानता था।

उसने उसे यह नहीं बताया था। उसे शिष्यों के जाने, फसह की तैयारी करने, इत्यादि से संबंधित परिस्थितियों के बारे में पहले से ही पता था। लेकिन पिता की यह इच्छा नहीं थी कि बेटा अपने अपमान की स्थिति में अपने दूसरे आगमन के समय को जाने।

क्यों? हम नहीं जानते। लेकिन यह सच है। यह उनके दिव्य ज्ञान को गलत साबित नहीं करता।

यह सिर्फ उसकी मानवता को रेखांकित करता है। उसने पिता की आज्ञा का पालन करने की इच्छा की और अपनी दिव्य शक्तियों का उपयोग नहीं किया जब यह पिता की इच्छा नहीं थी। गेथसेमेन।

मेरा एक शिक्षक था। एक ईश्वरीय व्यक्ति। निश्चित रूप से, वह मूर्खतापूर्ण बातें करता था। मैं यीशु को अपने प्रभु के रूप में सम्मान नहीं दे सकता था यदि वह गेथसेमेन के बगीचे में क्रूस से गिर गया होता। अरे, प्यारे भाई, ऐसा मत कहो। यह बहुत मूर्खतापूर्ण है।

आपको यीशु को अपने प्रभु के रूप में सम्मान देना चाहिए, चाहे आप उसे पूरी तरह से समझें या नहीं। और आप हम सभी की तरह ऐसा नहीं करते। मुझे लगता है कि वह बिना पाप के क्रूस से इसलिए पीछे हट गया क्योंकि उसने देखा कि आगे क्या होने वाला है, और यह उसके लिए एक अभूतपूर्व आपदा थी जिसे पिता प्यार करता था, और यह इसके विपरीत था।

और मैं पवित्र आत्मा को इस दिव्य प्रेम, त्रित्ववादी एकता और अनंत काल के लिए संगति से बाहर नहीं रखना चाहता। और स्वर्ग से एक से अधिक बार, पिता ने कहा जब बेटा धरती पर था, यह मेरा प्रिय बेटा है। उनकी संगति टूटने वाली थी।

यीशु को वह सब सहना था जिसे फादर और थॉमस एक्विनास और जॉन कैल्विन ने नरक की सज़ा कहा था। यही पोएना है सेंसस, इंद्रियों की सजा, ईश्वर के क्रोध को महसूस करना। उसने क्रूस पर ईश्वर के क्रोध का प्याला पी लिया।

और फिर पोएना डमनी, परमेश्वर द्वारा त्याग दिया जाना, जैसा कि उसने अपने त्याग की पुकार में रोया था जिसे दाऊद कभी भी पूरी तरह से नहीं समझ सकता था, क्योंकि वह एक साधारण व्यक्ति था जिस पर भयानक उत्पीड़न हुआ था। यह सच है - मेरा वचन, न केवल शाऊल से बल्कि उसके अपने बेटे जोनाथन [अबशालोम] से भी।

यह भयानक है। ओह, लेकिन यह ईश्वर के बेटे की तरह नहीं था जो अपने पिता के साथ शाश्वत संगति के विघटन से डरता था। मेरे ईश्वर, मेरे ईश्वर, आपने मुझे क्यों त्याग दिया? अगर मैं यह सही कहता हूँ, तो मैं ऐसा नहीं करने का चुनाव करता हूँ।

गतसमनी वास्तविक था। और वे स्थान जहाँ हमारे प्रभु की मानवता कच्ची है, प्रलोभन, दिन का पता न होना, गतसमनी की रखवाली करना, हमारे विश्वास के लिए उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने वे अंश जो कहते हैं कि पिता ने स्वर्ग और पृथ्वी बनाने के लिए उसका उपयोग किया। यीशु की वास्तविक और पूर्ण मानवता के लिए हमारा अंश कुलुस्सियों 1:15 से 20 है।

मैं इसे फिर से कहूँगा। कुलुस्सियों 1, यूहन्ना 1, फिलिप्पियों 2, और इब्रानियों 1 सभी मसीह के ईश्वरत्व को दर्शाते हैं। हे भगवान।

यह मसीह के ईश्वरत्व पर एक महान अंश है, लेकिन यह यूहन्ना 1 और इब्रानियों 1 के साथ-साथ, और विशेष रूप से इब्रानियों 2 में जाकर, हमारे प्रभु की मानवता को शक्तिशाली रूप से सिखाता है। कुलुस्सियों 1:15 से 20। यहाँ एक महत्वपूर्ण बात यह है कि पद 18 में भाषा का प्रयोग किया गया है कि हर चीज़ में, वह सर्वोच्च हो सकता है।

वह सब कुछ में सर्वोच्च या सर्वोपरि है या सृष्टि पर उसका पहला स्थान है। श्लोक 15 से 17. और वह नई सृष्टि पर सर्वोच्च या सर्वोपरि है, जिसमें कलीसिया भी शामिल है।

श्लोक 18 से 20. कुलुस्सियों 1, 15 से शुरू। वह अदृश्य परमेश्वर का स्वरूप है, सारी सृष्टि में ज्येष्ठ है।

क्योंकि उसी में सारी वस्तुएं सृजी गईं, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार। सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गईं। और वही सब वस्तुओं में प्रथम है।

और उसी में सब कुछ एक साथ बना रहता है। और वही शरीर, यानी चर्च का मुखिया है। वही शुरुआत है, मृतकों में से ज्येष्ठ पुत्र।

वह सब कुछ है, सृष्टि और नई सृष्टि, वह सर्वोच्च हो सकता है। क्योंकि उसमें, परमेश्वर की सारी परिपूर्णता वास करने और उसके द्वारा सब वस्तुओं को अपने साथ मिलाने के लिए प्रसन्न थी, चाहे वह पृथ्वी पर हो या स्वर्ग में, उसके क्रूस के लहू के द्वारा शांति स्थापित करना। माना कि, जोर वास्तव में उसके दिव्य स्वभाव पर है।

मुझे इन अंशों को महान धार्मिक विषयों के साथ जोड़ने में बहुत संघर्ष करना पड़ा। अवतार, यूहन्ना 1, बस एक उदाहरण है। देवता, यूहन्ना 1, कुलुस्सियों 1, इब्रानियों 1। मैंने इब्रानियों 1 को इसलिए चुना क्योंकि सभी पाँच ऐतिहासिक प्रमाण वहाँ थे, लेकिन कुलुस्सियों 1 भी उतना ही प्रभावशाली है।

हे भगवान। फिर भी, उनकी मानवता यहाँ है। उनके अवतार का संकेत श्लोक 15 में दिया गया है।

वह अदृश्य ईश्वर की छवि है। इसका अर्थ यह है कि वह दृश्यमान छवि है, दृश्यमान अभिव्यक्ति है; दृश्यमान रहस्योद्घाटन अदृश्य ईश्वर का एक अच्छा वचन है। यदि ईश्वर दृश्यमान हो जाए, तो कोई भी मुझे देखकर जीवित नहीं रह सकता, ईश्वर ने निर्गमन 33 में मूसा से कहा।

फिर उसने उसे चट्टान पर मारा और मूसा को अपनी पीठ की झलक दिखाई। यह उसके दिव्य स्वभाव और महिमा की एक छोटी सी झलक है। लेकिन अब, अदृश्य परमेश्वर, जैसा कि यूहन्ना 1:18 में कहा गया है, किसी ने भी परमेश्वर को नहीं देखा है।

एकमात्र ईश्वर जो पिता की गोद में है, उसने उसे समझाया है। इसी तरह, वह अदृश्य ईश्वर की छवि, दृश्यमान रहस्योद्घाटन है। ऐसा कैसे है? केवल अपने अवतार में।

तो, पहले से ही, उसके अवतार का संकेत दिया गया है। वह पूरी सृष्टि में सर्वोच्च है, ज्येष्ठ, क्योंकि उसने बनाया, क्योंकि उसके द्वारा पिता ने सब कुछ बनाया। वह शाश्वत है, 17.

वह ईश्वरीय व्यवस्था का कार्य करता है, 17बी। इसके अलावा, वह शरीर, चर्च का मुखिया है। वह शुरुआत है, ज्येष्ठ पुत्र, जिसे दोहराया जाता है।

सारी सृष्टि में ज्येष्ठ, सर्वोच्च, क्योंकि उसने इसे बनाया है। वह मृतकों में से ज्येष्ठ है। जाहिर है, उसकी मृत्यु के बारे में बात करना उसकी मानवता को संदर्भित करता है।

वह शुरुआत में कैसे है? एक बार फिर, यह उत्पत्ति 1.1 का एक संकेत है। शुरुआत में, भगवान ने आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया। आप कहते हैं, लेकिन एक मिनट रुकिए, सृष्टि उस पहले पैराग्राफ में थी, हम इसे 15 से 17 कहेंगे। 18 और उसके बाद चर्च की बात की जाती है।

ओह, यह सही है, यह सही है। शुरुआत में, उसके द्वारा, स्वर्ग और पृथ्वी की सभी चीजें बनाई गईं। 16.

18. वह इस बार सृष्टि की शुरुआत नहीं है, बल्कि नई सृष्टि, पुनः सृष्टि की शुरुआत है, जिसमें अभी पुनर्जन्म और अंतिम दिन नया आकाश और नई पृथ्वी शामिल है। वह परमेश्वर की नई सृष्टि की शुरुआत है, मृतकों में से ज्येष्ठ पुत्र।

मैं समझ गया। वह जी उठा है, और इस तरह, वह हमारे पुनरुत्थान का कारण बनेगा। जैसा कि हमने फिलिप्पियों 3:21 में देखा, सब वस्तुओं को अपने अधीन करने की उसकी शक्ति से, वह हमारे दीन-हीन शरीरों को अपने महिमामय शरीर के समान रूपांतरित कर देगा।

इन सबका उद्देश्य यह है कि हर चीज़ में, चाहे वह सृष्टि हो या नई सृष्टि, उसे पहला स्थान मिले। क्योंकि उसमें परमेश्वर की सारी परिपूर्णता वास करने के लिए प्रसन्न थी। उसमें कौन है? देहधारी यीशु में।

और उसके द्वारा सब वस्तुओं को अपने साथ मिला लेना, क्रूस पर बहाए गए लहू के द्वारा शांति स्थापित करना। अर्थात् उसकी हिंसक मृत्यु के द्वारा। यह अंश उसके ईश्वरत्व पर अधिक जोर देता है।

मैं मानता हूँ, यह सच है। यह उनके शरीर, उनके रक्त, उनके अवतार और उनकी मृत्यु के बारे में भी सिखाता है और संकेत देता है और इस तरह, उनकी मानवता का प्रमाण है। भगवान की इच्छा से, हमारे अगले व्याख्यान में, हम ईश्वर के अवतार पुत्र की मानवता के उन सबूतों को शुरू करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा क्राइस्टोलॉजी पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र संख्या 16 है, सिस्टेमेटिक्स, केनोइसिज्म की आलोचना, मसीह की मानवता, कुलुस्सियों 1:15-20।